भीम ठटाल की तीन कविताएं

(1)

सिन्कोना* बाग से मेरा संसर्ग

सिन्कोना किसी एक भूगोल का नहीं था
सिन्कोना किसी समय मेरी भी चिट्ठी के पहुंचने का
ठिकाना हुआ करता था।
सिन्कोना बाग में श्रमदान देने वाले
हमारे अपने हुआ करते थे
हमारे गम और खुशियों में भी
उनके होने का अपनापन था।

सिन्कोना बाग से होते हुए जाने वाली सड़क से हम
ऊपर पहाड़ की ओर कहीं जाया करते थे
जाया करती थी हमारे सुख और दु:ख की नीरवता भी
सड़कें हमें बीच में ही कहीं छोड़कर
हमें अपनी सड़क अपने आप खोजने को
उत्साहित करती हुई कहीं खो जाया करती थी।

अपनी सड़क न खोज पाने पर हम
इन्हीं सिन्कोना के पौधों और छोटी-छोटी टहनियों को पकड़कर
वापस लौट आया करते थे।

खुद बीमार रहकर भी दवा और जड़ी बूटियाँ उगाने वाले
यहाँ के लोग कब ठीक होंगे सोचकर

---

* सिन्कोना: कुलैन अर्थात् सिन्कोना पौधे से मलेरिया के उपचार की औषधि बनाई जाती है।

हम कभी कभार चिन्तित हुआ करते थे।

मन की बात समझने और
बोले बगैर बातें जिनसे करने को
मन आतुर था
उन बंधुओं के साथ
कई बार साथ-साथ हम चले!

आज मैं जो खत भेजता हूँ
वहाँ से संबंधित लोगों के न मिलने पर
बेरंग, विरक्त वापस लौट आते हैं!
सोचता होगा डाकिया भी
कि बिना बताए ऐसे ही ये सब के सब
किधर चले गए?
किनारा हो या पहाड़ कहीं तो होंगे!
किन्तु बताए कौन कि कहाँ होंगे ये सब?
किससे पूछें उनके घर का पता ? कहाँ खोजें?
और अगर मिल भी गए तो पहचानें कैसे?

तमाम ये सारे सवाल करें तो करें किससे?
कौन हैं ये सिन्कोना बाग के रखवाले?
उनके चेहरों पर मुझे पहले जैसा
अपनापन क्यों नहीं दिखता?
मुझे सिन्कोना बाग के साथ प्यार से जोड़ने वाले
वह प्यारे संबंध और उनका अपनापन कहाँ चला गया?
पर मैं निराश नहीं हूँ,
मेरे खतों को आज नहीं तो कल,
कभी न कभी तो ठिकाना मिलेगा!

(2)

जीवन और आवश्यक उपकरण

आस-पास कुछ करीबी दोस्त
ठीक-ठाक दो वक्त की रोटी
साथ देने वाला मजबूत कंधा
तरो-ताजा रखने लायक कुछ पुरानी यादें
पछताने को भद्दी सी कोई घटना
प्रावधान के एकाध पैकेट
कुछ अच्छी किताबें और
बैट्री से चलने वाली पुरानी लंबी टॉर्च

फोन करने को कुछ खास दोस्त
दीवार में लटका पुराना एक पोस्टर
पूरा कंचनजंघा झट से अन्दर
घुसना चाहता है एक छोटी सी खिड़की से
पता लगभग मिट चुका
न भेजी हुई एक पुरानी चिट्ठी
प्रगति-पत्र में कुछ प्रभावकारी टिप्पणियाँ
बरसात की शाम को निकलने के लिए एक जोड़ा गमबूट
कहीं से भी सामाजिक नहीं लगता
सोशल मीडिया पर कुछ दोस्त
कहाँ सुधारना है पता ही न चलता

कभी न खत्म होने वाली जिन्दगी की अनुभूति का वाक्य
दायरे में रहकर मजाक करने को पहचाना सा कोई
बच्चू कैलाश और मुकेश के गीत
एक ही सुर में बजता पुराना छोटा सा रेडियो
गाँव की लड़की की विदेश में कोई स्पर्धा जीतने की ख़बर
बिना जूतों के चलने के लिए थोड़ी सी मिट्टी

राजनैतिक शोर-शराबा से परे
पीले फूलों को दिखाता पुराना केबल टीवी.
सर टिकाने को नरम एक तकिया

चैन से सोने को एक विश्वस्त शुभ रात्रि
अच्छे से जागने को एक निश्चित शुभ प्रभात
जिन्दगी को इससे ज्यादा और क्या चाहिए? ....

(3)

रियालिटी शो से साक्षात्कार

रोग और भूख से ग्रस्त बच्चे सड़क के किनारे मर रहे हैं
सिने स्टार और सुपर मॉडलों की
इन्हें बचाने की चैरिटी कसमों के साथ
रोग और भूख से ग्रस्त बच्चे सड़क किनारे मर रहे हैं!

समय ने सब कुछ बोया-उगाया है
अपना भविष्य सुरक्षित करने के लिए हमारे अपनों ने
इज्ज़त, सम्मान और अर्थबोध
अपने संस्कार के बगीचों को जड़ से उखाड़ फेंका है।
टीवी. के सेलेब्रिटी गरीब उत्थान की कसमें खाते हैं
और अपना मीडिया आँखों के विज्ञापन आँसू
सूखने से पहले उनके कर्तव्यबोध के मगरमच्छ
स्टेज पर थिरकने लगते हैं
गरीबी के मगरमच्छ दिन दहाड़े गलियों में
हमारे बच्चों को निगलते हैं।

हमारे इन बच्चों के शायद कई सारे सवालात होंगे!
जैसे कि:
बच्चे बार-बार क्यों बोर-वेल के गड्ढों में गिर जाते हैं?
क्यों भ्रूण डस्टबिन से बरी किए जाते हैं?
क्यों बच्चों की हड्डियाँ नालों से बरामद होती हैं?
क्यों दिन चुके बगैर रेलगाडियाँ पटरियों से उतर जाती हैं?
क्यों शिक्षा और विवेक तिजारत बनते हैं?
क्यों मंत्री अपने दिए गए विभागों से असंतुष्ट रहते हैं?

खौलना चाहिए था जिस खून को
वह अब ठंडा पड़ गया है
कितना भयावह समय है यह
जब रक्त-रञ्जित जर्जर युद्ध से आक्रांत रक्तिम शहर में
रक्त न मिलने से एक बच्चा मर जाता है
और मैं
देश की राजधानी के बड़े अस्पताल में
एक एस.एम.एस नहीं भेज सकता हूँ!

लगता है अब बहुत हो चुका
किसी मोर्चे के दबाव में आकर
पानी के ऊपर राजनीति और म्युनिसिपालिटी के आग्रह पर
स्वतंत्रता समारोह में आत्मघाती हमला
लगता है अब बहुत हो चुका।

शायद समय आ गया है अब
विद्वानजनों के वनवास जाने का
विवेक के वनवास जाने का।

*(**लेखकीय परिचय:** भीम ठटाल चर्चित कवि एवं भाषाविद् हैं। हिंदी साहित्य सेवा समिति, सिक्किम के अध्यक्ष के रूप में हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार में भीम ठटाल का योगदान उल्लेखनीय है।)*

***